ओडिशा स्थापत्यकला एवं मूर्तिकला का विशेष–अध्ययन

सौम्या पाण्डेय
डॉ0 कामना शुक्ला

कृपालु महिला महाविद्यालय,
कुण्डा प्रतापगढ़

उड़ीसा स्थापत्य कला एवं मूर्ति कलाः–

प्राचीन काल में उड़ीसा को कलिंग के नाम से जाना जाता था। इस क्षेत्र का दूसरा प्राचीन नाम उत्कल था। उत्कल अर्थात उत्कृष्ट कलाओं एवं कलाकारों से परिपूर्ण देश। इसके प्राचीन से लेकर मध्यकाल तक विभिन्न नाम प्राप्त होते हैं। उत्करात, ओड्र, ओद्र, ओद्रदेश, ओड, त्रिकलिंग, दक्षिण कोसल, कंगोद, तोषाली, छेदी तथा मत्स आदि नाम से जाना जाता था। परंतु इनमें से कोई भी नाम संपूर्ण उड़ीसा को इंगित नहीं करता था। अपितु यह नाम समय–समय पर उड़ीसा राज्य के कुछ भाग को ही प्रस्तुत करते थे। वर्तमान नाम ओडिशा से पूर्व इस राज्य को मध्यकाल में उड़ीसा नाम से जाना जाता था, जिसे आधिकारिक रूप से 4 नवंबर 2011 को ओड़िशा नाम में परिवर्तित कर दिया गया। ओड़िशा नाम की उत्पत्ति संस्कृत के शब्द ओड् से हुई है, इस राज्य की स्थापना भागीरथ वंश के राजा ओड ने की थी, जिन्होंने ओड– वंश व ओड् राज्य की स्थापना की। समय विचारण के साथ तीसरी सदी ईसा पूर्व से ओड् राज्य पर महामेघवाहन वंश, मठार वंश, शैलोदभव वंश, भौमकर वंश, नंदोद्भव वंश, सोम वंश, गंग वंश, व सूर्यवंश आदि का आधिपत्य भी रहा। प्राचीन काल में ओडिशा राज्य का वृहद भाग कालिंग नाम से जाना जाता था। सम्राट अशोक ने 261 ईसा पूर्व कलिंग पर चढ़ाई कर विजय प्राप्त की युद्ध में भारी नरसंहार से क्षुब्द होकर अशोक ने युद्ध त्याग कर बौद्ध मत को अपनाया वह उनका प्रचार प्रसार किया। दूसरी शताब्दी में खारवेल इस राज्य के एक शक्तिशाली शासक के रूप में उभरे। उनकी मृत्यु के बाद उड़ीसा गुमनामी में चला गया।

चौथी शताब्दी ईस्वी में गुप्त शासक समुद्रगुप्त ने उड़ीसा पर आक्रमण किया और इस राज्य तक अपना साम्राज्य बढ़ाया। 606 ईस्वी में उड़ीसा राज्य शशांक के अधीन था। उसके बाद सातवीं शताब्दी ईस्वी में गंग राजवंश की तरह एक के बाद एक कई ओड़िया राजवंशों ने इस राज्य पर शासन किया 795 ईस्वी में महा शिव गुप्त याजाति द्वितीय सिंहासन पर बैठा और उसके साथ उड़ीसा के इतिहास में सबसे शानदार युग की शुरुआत हुई। उन्होंने कलिंग उत्कल और कौशल को खारवेल की शाही परंपरा में एकजुट किया।

13वीं शताब्दी के दौरान और उसके बाद दिल्ली के मुस्लिम शासको ने ज्यादातर बंगाल में अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से उड़ीसा में घुसपैठ करने की कोशिश की लेकिन उड़ीसा के शासको ने उनकी आक्रामकता का विरोध किया बाद में ही शासन और मुगल बादशाह अपने प्रयासों में सफल हुएं। 16वीं शताब्दी के मध्य 592 तक उड़ीसा पर क्रमिक रूप से पांच मुस्लिम राजाओं का शासन रहा मुगलों के पतन के साथ ही मराठों ने उड़ीसा पर कब्जा कर लिया अंततः अंग्रेजों ने मराठों से राज्य पर कब्जा कर लिया। हालांकि उड़ीसा के कुछ हिस्सों में कई देशी रियासतें काम करती रही। उड़ीसा में ऐसे 26 राज्य थे 1936 में अंग्रेजों ने उड़ीसा को एक अलग प्रांत बना दिया। आजादी के बाद भारतीय एकता की सूत्रधार सरदार वल्लभभाई पटेल ने उड़ीसा की रियासतों को भारतीय संघ की रियासतों में पूरी तरह शामिल कर दिया।

वर्तमान नाम ओडिशा से पूर्व इस राज्य को मध्यकाल में उड़ीसा नाम से जाना जाता था, जिसे आधिकारिक रूप से 4 नवंबर 2011 को ओड़िशा नाम में परिवर्तित कर दिया गया। इस राज्य की स्थापना भागीरथ वंश के राजा ओड ने की थी, जिन्होंने ओड– वंश व ओड् राज्य की स्थापना की। तीसरी सदी ईसा पूर्व से ओड् राज्य पर महामेघवाहन वंश, मठार वंश, शैलोदभव वंश, भौमकर वंश, नंदोद्भव वंश, सोम वंश, गंग वंश, व सूर्यवंश आदि का आधिपत्य भी रहा। प्राचीन काल में ओडिशा राज्य का वृहद भाग कालिंग नाम से जाना जाता था।

धर्मः–

राज्य में 95 प्रतिशत से अधिक लोग हिंदू धर्म के अनुयायी हैं हिंदू संप्रदाय की तरह शैव और शक्ति भी उड़ीसा में हिंदू विश्वासों के सबसे पुराने तरीके हैं। जिनमें कई शाही राजवंशों ने इतिहास में अपने शासनकाल के दौरान स्मारक मंदिर स्थापित किया और उन्हें राज्य धर्म बनाया समुदाय विशेष की संगठन राज्य में बेहद लोकप्रिय है और पुरी में वार्षिक रथ यात्राएं दुनिया भर से तीर्थ यात्रियों को आकर्षित करती है जबकि उड़ीसा राज्य भर में समलेश्वरी, तारा–तारिणी, मंगला मंदिर ठकुरानी, तारिणी और मणिकेश्वरी जैसे देवी के प्रमुख मंदिर शक्ति और तांत्रिक पंथ को समर्पित है। राज्य की राजधानी में सैकड़ो मंदिर हैं इन्हें भारत के मंदिरों के शहर के रूप में भी जाना जाता है। राज्य की कुल जनसंख्या में लगभग 2–5 प्रतिशत इसाई हैं दो प्रतिशत मुस्लिम है तथा जैन बौद्ध एवं सिख धर्म को मानने वाले हैं।

मंदिर स्थापत्यः–

भारतीय मंदिरों का आविर्भाव अचानक नहीं हुआ, अपितु इसके पीछे एक सुदीर्घ परंपरा दिखाई देती है। मंदिर निर्माण की प्रक्रिया का आरंभ तो मौर्य काल से ही शुरू हो गया था किंतु आगे चलकर उसमें सुधार होता गया और गुप्त काल को संरचनात्मक मंदिरों की विशेषता से पूर्ण देखा जाता है।

अति प्राचीन काल में मंदिर बेदी के रूप में खुले आकाश के नीचे बनाए जाते थे। जिसे चौरण कहा जाता था इसके ऊपर देव प्रतीक रखकर पूजा–अर्चना की जाती थी। मंदिर निर्माण

की दूसरे चरण में बेदी के चारों ओर बाड़ बनाने की प्रथा प्रारंभ हुई इसे प्राकार कहा गया। पहले यह बाँस या लकड़ी का बनता था जिसे अंततः पाषाण का बनाए जाने लगा। गुप्त काल से पहले बने मंदिर की निम्नलिखित कमियां थीः–

- इनका आकार छोटा था।
- गर्भ ग्रह तक पहुंचने के लिए सीढ़ियां नहीं थी।
- छतें सपाट थी जिसके कारण वर्षा जल के निकास की समस्या थी।
- यह आकार में बेहद छोटे होते थे, अलग से कोई प्रदक्षिणा पद नहीं था।

ओडिशा स्थापत्यः–

- ओडिशा स्थापत्य का प्रचलन 8वीं से 13वीं शताब्दी तक रहा।
- ओडिशा के विभिन्न शासक शैल, सोम, भौम, पूर्वी गंग या चेदि आदि वंशों से संरक्षण मिला।
- ओडिशा के मंदिर मुख्यतः भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क में स्थित है।
- ओडिशा वास्तुकला की अपनी पहचान धविशेषताओं में देउल (गर्भ– ग्रह के ऊपर उठता हुआ विमान तल) जगमोहन (गर्भ– ग्रह के बगल का विशाल हाल) नट मंडप (जगमोहन के बगल में नृत्य के लिए हाल) भोग मंडप परकोटा तथा ग्रेनाइट पत्थर का इस्तेमाल शामिल है।
- भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर, राजरानी मंदिर, पुरी का जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर, इस शैली के श्रेष्ठ उदाहरण है।
- कोणार्क के सूर्य मंदिर को 1884 ई में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया।
- लिंगराज मंदिर ओडिशा स्थापत्य की संपूर्ण विशेषताओं का सर्वोत्तम उदाहरण है।
- भुवनेश्वर में बाद में बने मंदिरों में सन 1278 में स्थापित अनंत वासुदेव मंदिर कई तरह में विशिष्ट है, मुख्य रूप से शैव स्थल पर वैष्णव आराधना को समर्पित एकमात्र मंदिर है, जो कि एक अलंकृत चबूतरे पर खड़ा है।

पुरी के मंदिरः–

शैली– यूं तो पूर्व मध्यकाल में जो शैली प्रचलित थी उसी का विकसित रूप उत्तर मध्यकाल में देखने को मिलता है परंतु अधिक भव्यता और अलंकरण के साथ जो की विशेष अलंकृत और श्रृंगार प्रधान शैली के रूप में प्रचलित हुई। उड़ीसा भर में इस कल के अनेक मंदिर फैले हुए हैं परंतु इनमें से मुख्य रूप से पुरी का जगन्नाथ मंदिर भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर

इस शैली के प्रमुख उदाहरण हैं, विद्वानों ने इन मंदिरों को कलिंग शैली के अंतर्गत रखा है। उड़ीसा के मंदिरों की शैली के संबंध में श्री राय कृष्ण दास जी का वक्तव्य ध्यान देने योग्य हैः– ''अत्यधिक अलंकृत होते हुए भी इसमें ऐसा भारीपन और थोथापन है एवं उनकी कुर्सी इतनी नीचे है कि इनकी भव्यता को बहुत बड़ा धक्का पहुंचता है इनके शिखर ऊपर पहुंचते–पहुंचते कुछ गोलाई लिए हो जाते हैं जिन पर चिपटापन आमलक गला दबाता सा जान पड़ता है।''

विषयः–

विषय की दृष्टि से इन मंदिरों में असंख्य मूर्तियां हैं जिनकी विशालता सजीवता एवं उत्कृष्टता आश्चर्यचकित कर देने वाली है। यहां नागकन्याओं नायिका की मूर्तियों को दर्शाया गया है। मंदिरों में रामायण, महाभारत तथा कृष्ण लीला से संबंधित दृश्य की भी भरमार है। जिन्हें कथात्मक शैली में अंकित किया गया है।

पुरी का जगन्नाथ मंदिरः–

पुरी का विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। इस मंदिर का निर्माण काल 1085 ई0 से 1090 ई0 के मध्य माना जाता है। मंदिर में भगवान जगन्नाथ सुभद्रा और बलराम की बड़ी–बड़ी विशाल मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। इनके अतिरिक्त शिव–पार्वती, ब्रह्मा–सावित्री एवं विष्णु–लक्ष्मी आदि की प्रतिमाएं भी हैं। जिनकी कल्पना यहां पर पुरुष प्रकृति मंदिरों में श्रेष्ठतम और विशालतम है। यहां बाहरी दीवार में तीन तोरण द्वारा बने हुए हैं। जिनमें से सिंहद्वार अत्यंत भव्य आकर्षक है।

शिल्प उदाहरणः–

यह मंदिर की बाह्य भित्तियों पर अष्ट दिक्पालों देवताओं में सूर्य गणेश कार्तिकेय ब्रह्मा व अर्धनारीश्वर की प्रतिमाएं वह पार्वती लक्ष्मी आदि देवियों की शिल्पाकृतियां उकेरी गई है। इनके मध्य के अंतराल में ब्याल और अनेक प्रकार की मनभावन मुद्राओं में सूरसुंदरियों का अंकन किया गया है।

रामायण और महाभारत की दृश्य उत्क्रीर्ण किए गए हैं जिनके अंतर्गत पांडवों का स्वर्गारोहण एक अत्यंत ही उत्कृष्ट कलाकृति है। संपूर्ण मंदिर में असंख्य मूर्तियां हैं उनमें से कुछ मूर्ति शिल्प आज विश्व प्रसिद्ध भी प्राप्त कर चुके हैं जिनमें से प्रेम पत्र लिखती एक नारी मूर्ति जिनके अलंकरणों की शोभा केश विन्यास भाव–भंगिमा और शारीरिक गठन इत्यादि अत्यंत दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त भी अन्य असंख्य मूर्तियां इस मंदिर के शिल्प वैभव को द्विगुणित करती दिखाई देती है।

जिसमें सप्ताश्व–रथ, उषा, प्रत्यूष, दंड, पिंगल, गंधर्व तथा अन्य आकृतियां भी बनाई गई है। मुखकृति एवं आकर्षक अलंकरण है परंतु शरीर रचना में कठोरता दिखाई देती है। इस प्रतिमा

में सूर्य के मुख का मंद हास्य का भाव विशेष रूप से दर्शनी है समस्त अलंकरण सु{मता के साथ उकेरे गए हैं।

भुवनेश्वर के मंदिरः–

भुवनेश्वर को मंदिरों की नगरी भी कहा जाता है कि यहां की पवित्र झील के चारों ओर कभी लगभग 6000 मंदिर बने हुए थे किंतु अब केवल 100 मंदिर शेष बचे हुए। भुवनेश्वर में इस अवधि में बने मंदिरों में लिंगराज मंदिर (1100 ई0) मुक्तेश्वर (950 ई0) राजा रानी (11वीं शताब्दी का प्रारंभ) मेघेश्वर (1180 ई0) बृहदेश्वर कंदारेश्वर और अनंत वासुदेव (1275 ई0) मुख्य है।

लिंगराज मंदिरः–

इस विशाल मंदिर का निर्माण काल (1100 ई0) माना जाता है। जिसका व्यास 720•466 वर्ग फीट है जो साढ़े सात फीट मोटे दीवार से घिरा हुआ है। यह मंदिर पूर्वी भारत के रूप में की गई है।

कोणार्क का सूर्य मंदिरः–

उड़ीसा स्थापत्य कला शैली की सर्वोत्तम उपलब्धि कोणार्क में स्थित सूर्य मंदिर हैं यह पूरी से उत्तर पूर्व की ओर लगभग 20 मील की दूरी पर स्थित हैं इसे नरसिंह देव प्रथम ने (1238 से 64 ई0) के शासनकाल में निर्मित किया गया थां।

इसका विशाल शिखर लगभग 200 फीट ऊंचा है यद्यपि अब यहां भागनावस्था में हैं। यह सूर्य देवता के रथ की आकृति का बनाया गया है जिसे 7 सजे–संवरे अश्व खींचते हुए प्रदर्शित किए गए हैं। इसे ''ब्लैक पैगोडा'' के नाम से पुकारते हैं।

प्रमुख शिल्प उदाहरणः–

सूर्य प्रतिमा– यह प्रमाण प्राप्त हुए हैं कि कोणार्क के इस मंदिर के गर्भ ग्रह की विशालतम सूर्य प्रतिमा का निर्माण सदाशिव ने ही किया था। यह सूर्य प्रतिमा अपने संपूर्ण लक्षणों के विकास की पराकाष्ठा प्रदर्शित करती हैं।

उड़ीसा स्थापत्य एवं मूर्ति कला की विशेषताएं–

उड़ीसा के अधिकांश मंदिर ऊंचे चबूतरे पर (पीढा) पर बने हुए हैं। प्रारंभिक मंदिरों को दिवाल तीन भागों में विभाजित है गण्डि (शिखर) पगों में विभाजित है। रेख देउल का शिखर ऊपर की ओर बढ़ते हुए अंदर की ओर हो गया है।

उड़ीसा मंदिरों में शिखर बनने की होड़ सी लग रही थी। प्रारंभिक चरण में परशुरामे"वरम् मंदिर में 1:3 में था वह अंत में (कोणार्क के सूर्य मंदिर) 1:7 तक पहुंच गया था।

उड़ीसा के सभी मंदिर अलंकरण से ओत –प्रोत थे आकृतियों में किंचित स्थूलता है। नाग कन्याओं, संगीत–बालाओं, वादकों एवं नायिका भेद इत्यादि से संबंधित शिल्पकृतियां अंकित हैं। अनेक स्थानों पर मातृत्व के प्रभाव को प्रदर्शित करने वाली नारी आकृतियां भी हैं।

निष्कर्षः– उपर्युक्त विवरण से यह कहा जा सकता है कि उड़ीसा में मंदिर निर्माण का कार्य अपेक्षाकृत दीर्घकाल तक चलता रहा मंदिर में शैलीगत विकास दृष्टिगोचर होता है यहां की मूर्ति कला अत्यंत सु{मता एवं सजीवता का घोतक प्रतीत होता है।